[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3499

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के पाठ्यक्रम में परिवर्तन की संभावित दिशाएं
(देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सुवर्णा वाड
प्राध्यापक कंठ संगीत
माता जीजाबाई 'शा. स्ना. कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

प्रस्तुत विषय की प्रस्तावना करते समय विषय के प्रत्येक बिन्दु का विश्लेषण करना आवश्यक है जैसे संगीत के पाठ्यक्रम में परिवर्तन क्यों? तथा देवी अहिल्या विश्व विद्यालय का विशेष संदर्भ क्यों? मेरी सम्पूर्ण शिक्षा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में होने , मैं गत 36 वर्षों से कंठ संगीत के पाठ्यक्रम के सम्पर्क में हूँ। दे.अ.वि.वि का कंठ संगीत का पाठ्यक्रम कई वर्षों तक एक समान ही रहा परन्तु कम्प्यूटर एवं कॉमर्स जैसे विषयों के कन्या महाविद्यालयों में पदार्पण होने से छात्राओं की सोच में परिवर्तन आया। पूर्व में कला संकाय में छात्राओं की संख्या काफी सराहनीय होती थी परन्तु धीरे धीरे छात्राओं ने कॉमर्स एवं कम्प्यूटर विषय लेने शुरू किए। इसका कारण इन विषयों का रोजगारोन्मुख होना था। रोजगार की सम्भावनाएँ इन विषयों में तुलनात्मक रूप से अधिक होने से छात्राओं का इन विषयों में प्रवेश लेना स्वाभाविक था। कला संकाय में धीरे धीरे छात्राओं की संख्या कम हो गई है और उसमें भी ललित कला जैसे संगीत,चित्रकला आदि में और भी कम होती गई।

विद्यालयीन शिक्षा में भी संगीत विषय नही के बराबर होने से जो छात्राएं महाविद्यालय में कंठ संगीत विषय लेती हैं वे संगीत से एकदम अनभिज्ञ होती है। वाद्य संगीत एवं नृत्य तो विद्यालयों में विषय के रूप में है ही नही। आज से 25–30 वर्षो पूर्व अनेक परिवारों से छात्राएं संगीत सीखने संगीत महाविद्यालय में जाती थीं। महाविद्यालयीन शिक्षा में संगीत विषय के पदार्पण होने के बाद संगीत विषय में ठ.।. एवं ड.।. करने की छात्राओं में रूचि रही। इन्दौर में उस समय गुरू शिष्य परम्परा की अपेक्षा इस संस्थागत शिक्षण का बोलबाला अधिक था। धीरे धीरे संगीत विषय की छात्राओं की संख्या भी बढती गई।"एक समय ऐसा भी आया कि बी.ए. प्रथम वर्ष कंठ संगीत में 37 छात्राओं ने प्रवेश लिया। परन्तु यह स्थिति कम ही रही। समग्र रूप से देखा जाय तो 10 से 15 छात्राएं एक कक्षा में प्रवेश लेती थीं। परन्तु आज संगीत की स्थिति महाविद्यालयों में दयनीय ही कही जा सकती है। यह मै केवल इन्दौर एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की बात कर रही हूँ। अन्य स्थानों पर स्थिति इतनी दयनीय नही है। छात्राओं के बौद्धिक स्तर को देखते हुए संगीत के पाठ्यक्रम में परिवर्तन अत्यावश्यक हो गया है।

विश्वविद्यालय में संगीत विभाग प्रारंभ करने की अत्याधिक आवश्यकता है। इससे छात्राओं के अलावा छात्रों को भी संगीत विषय का अध्ययन करने में सुविधा होगी।

महाविद्यालय में संगीत विषय में प्रवेश लेने के समय छात्राओं का स्वर परिक्षण होना आवश्यक है इससे गुणवत्ता में सुधार होगा(परन्तु इसमें विसंगति यह है कि स्वर परीक्षण आवश्यकाल करने से अभी जितनी छात्राएं प्रवेश ले रही हैं संभव है कि उतनी भी ना लें और संगीत विषय ही समाप्त करने की नौबत आ जावे।) जिस प्रकार एम.ए. में प्रवेश देते समय बी.ए.संगीत के अलावा अन्य संगीत विश्वविद्यालयों की ठ.।. के समकक्ष उपाधियाँ जैसे ठ.डने. संगीत विशारद आदि चलती हैं ठीक इसी प्रकार संगीत में चे.क. करते समय भी केवल ड.।. के समकक्ष अन्य उपाधियाँ जैसे ड.उने.,अलंकार कोविद आदि को उपयुक्त समझा जाना चाहिए। इससे संगीत में शोध को बढावा मिलेगा।

प्रवेश लेते समय विषयों के समूह बनाएं जाते हैं जैसे गायन या वादन को साथ में नही लिया जा सकता वैसे ही गायन वादन एवं नृत्य तीनों विषय भी एक साथ नही लिए जा सकते। वर्तमान में आधार पाठ्यक्रम को यदि सूक्ष्मता से देखें तो पता चलता है कि स्नातक होते होते विद्यार्थी को विपुल मात्रा में सामान्य ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। किसी किसी विद्यार्थी या छात्रा का व्यक्तित्व ही कलाकार का होता है। हो सकता है कि छात्रा को इन विषयों के अलावा दूसरे विषयों में रूचि ना हो। वैसे भी वाद्य संगीत एवं नृत्य के लिए कंठ संगीत का ज्ञान अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा। अन्य विषयों के अध्ययन का भार नही पडने से विद्यार्थी पूरा मन लगाकर गायन वादन तथा नृत्य में निपुणता हासिल कर सकता है।

पिछले कुछ वर्षो से यह परिवर्तन दिख रहा है कि संगीत शिक्षा का चलन पुनः गुरू शिष्य परम्परा की तरफ मुड रहा है। वर्तमान में अनेक अच्छा गाने या बजाने वाले छात्र महाविद्यालयों में गायन वादन की स्नातकोत्तर शिक्षा लेने की अपेक्षा किसी दूसरे विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा लेना तथा घर पर गुरू शिष्य परम्परा से उस कला को सीखना पसन्द कर रहें है। इसके

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

छुपे कारणों को ढूंढ निकालना एक अलग शोध का विषय हो सकता है। जिस प्रकार एक विद्यार्थी चार वर्ष पढकर इंजिनियर बनता है यां पांच वर्ष में डॉक्टर की स्नातक उपाधि प्राप्त करता है वैसे ही एक कलाकार बनने के लिए संगीत भी इससे अधिक वर्ष मांगता है। अतः संगीत को एक तकनीकी विषय बताते हुए इसमें भी स्नातक प्रथम वर्ष में इंजिनियरिंग या मेडिकल के समान अन्य विषयों का अध्ययन कराके द्वितीय वर्ष से केवल संगीत का विस्तृत अध्ययन कराया जाना चाहिए इससे विद्यार्थि एवं शिक्षक दोनों ही एक दूसरे को अधिक समय दे सकतें हैं फलस्वरूप विद्यार्थी अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यह पाठ्यक्रम बी.ए. ऑनर्स कहलता है जो शायद अन्य प्रदेशों में चल रहा हैं मध्यप्रदेश में इसका अभाव ही है।

प्रायः विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक विषय पढने की आदत होती है अतः स्नातक स्तर में सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम को विस्तृत कर देना चाहिए तथा क्रियात्मक पाठ्यक्रम का सरली करण होना चाहिए। संगीत की छात्राओं को यदि अन्य विषय लेना आवश्यक है तो उन्हें संस्कृत,हिन्दी साहित्य एवं इतिहास जैसे विषय लेने हेतु प्रेरित करना चाहिए क्योंकि संगीत का सम्बन्ध इन तीनों विषयों से होता है तथा भविष्य में संगीत में स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन करते समय उपरोक्त विषयों का सामान्य ज्ञान लाभ देता है। बी.ए. प्रथम वर्ष में क्रियात्मक ज्ञान तुलनात्मक रूप से कम इसलिए होना चाहिए ताकि उसी चीज का बार बार अध्ययन करने से गले में एवं दिमाग में सुरों की पकड आ जावे।

दे.अ.वि.वि. के पाठ्यक्रम में एक गम्भीर त्रुटी को मै इस मंच से उजागर करना चाहती हूँ वो यह कि संगीत के प्रश्नोपत्रों का अंक विभाजन अत्यन्त त्रुटीपूर्ण है। संगीत यह एक प्रायोगिक कला होने से प्रायोगिक को अधिक अंक तथा सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों को प्रायोगिक से कम अंक रखे जाने चाहिए यदि सैद्धान्तिक का पाठ्यक्रम विस्तृत किया जाता है तो कम से कम समान अंक होना चाहिए। दे.अ.वि.वि. के पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र 85 अंक का(जिसमें 15 अंकों का ब्ब्) तथा प्रायोगिक 50 अंकों का है। किसी भी अन्य विश्वविद्यालय में इस प्रकार का अंक विभाजन नही है।

उपर्युक्त सभी विचारों को ध्यान में रखते हुए दे.अ.वि.वि. के कंठ संगीत विषय का पाठ्यक्रम निम्नानुसार बनाया जा सकता है।

बी.ए. प्रथम वर्ष प्रायोगिक

1) प्रथम युनीट में सभी अलंकारों का अध्ययन जो कि भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 में प्रारंभ में दिए गए है।——————— 20 अंक
2) द्वितीय युनीट में शुद्ध स्वर वाले 3 यथा कल्याण,खमाज,बिलावल तथा काफी एवं आसावरी रागों में आरोह अवरोह पकड के साथ सरगम एवं छोटे ख्याल पढाएं जाए।——————— 40 अंक
3) तृतीय युनीट में कोमल एवं तीव्र स्वरों वाले शेष 5. आश्रय राग यथा भैरव, पूर्वी मारवा तोडी एवं भैरवी में केवल आरोह अवरोह एवं पकड का गायन।——— अंक 20
4) चतुर्थ युनीट में एक देशभक्ति गीत या सरस्वती वंदना या लोकगीत।———— अंक 10
5) पंचम युनीट में हाथ पर ताली देकर निम्न तालों का प्रदर्शन
1)त्रिताल 2) झपताल 3) एकताल 4) धमार 5) चौताल ——— अंक 10

बी.ए. द्वितीय वर्ष प्रायोगिक

1) प्रथम युनीट में भूपाली एवं बिहाग रागों की सम्पूर्ण गायकी (बडे ख्याल तथा छोटे ख्याल आलाप तानसहित)।———————अंक 30
2) द्वितीय युनीट में निम्नलिखित रागों के आरोह अवरोह पकड एवं बन्दीश का गायन।
1)हमीर 2) केदार 3) वृन्दावनी सारंग 4)कामोद 5)देस ———————— अंक 20
3) तृतीय युनीट में निम्न रागों के केवल आरोह अवरोह एवं पकड का गायन एवं जानकारी
1)रामकली 2)सोहनी 3) पूरिया 4)हिडोंल 5) ललित ———————— अंक 20
4) चतुर्थ युनीट में उपर्युक्त रागों में से कोई दो धृपद दुगुन तिगुन एवं चौगुन सहित एवं एक तराना———————— अंक 20
5) पंचम युनीट में निम्न तालों का ताली देकर प्रदर्शन
1) दादरा 2) रूपक 3) तीव्रा 4) कहरवा 5) धुमाली

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

बी.ए. तृतीय वर्ष प्रायोगिक

1) प्रथम युनीट में छायानट बागेश्री तथा दरबारी कानडा रागों की सम्पूर्ण गायकी(तीनों रागों मं बडे ख्याल छोटे ख्याल आलाप तान सहित)
2) द्वितीय युनीट में निम्न रागों के आरोह अवरोह पकड एवं बन्दीश का गायन
   1) बहार 2) मियामल्हॉर 3) देशकार 4) शंकरा 5) गौडसारंग
3) तृतीय युनीट में निम्न रागों के केवल आरोह अवरोह एवं पकड का गायन
   1) पुरियाधनाश्री 2) बसन्त 3) परज 4) अडाना 5) जयजयवन्ती
4) चतुर्थ युनीट में उपर्युक्त रागों में से दो धमार दुगुन एवं चौगुन सहित तथा एक तराना
5) पंचम युनीट में निम्न तालों का ताली देकर प्रदर्शन
   1) आडा चौताल 2) झूमरा 3) दीपचन्दी 4) तिलवाडा 5) पंजाबी

प्रायः यह देखा गया है कि वर्तमान में छात्राओं को कोमल स्वरों वाले रागों का गायन कठिन पडता है अतः इस कठिनाई को देखते हुए सभी स्नातक प्रायोंगिकों की प्रथम युनिट के राग शुद्ध स्वरों वाले रखे गए है परन्तु विद्यार्थियों को कोमल स्वरों वाले रागों की सामान्य जानकारी भी अत्यावश्यक होने से द्वितीय एवं तृतीय इकाईयों में ऐसे रागों की केवल बन्दिशों एवं आरोह अवरोह पकड का गायन रखा गया है। प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष तक उत्तरोत्तर कठिन तालों का समावेश किया गया है।

सैद्धान्तिक का सम्भावित पाठ्यक्रम

बी.ए. प्रथम वर्ष
प्रथम इकाई कृ
परिभाषाएं

(अ) 1) अलंकार 2)थाट 3)राग 4)वादी 5)संवादी 6)अनुवादी 7)विवादी 8)स्वर 9)कोमल स्वर 10)तीव्र स्वर 11)वर्ज्य स्वर 12)शुद्ध स्वर 13)मात्रा 14)लय 15)ताल 16)सप्तक 17)राग जांति 18) औडव 19)षाडव 20)आरोह 21)अवरोह 22)पकड 23),सरगम 24)लक्षणगीत 25)छोटाख्याल 26)बडाख्याल 27)ताल 28)सम 29)खाली 30)मींड
(ब) प्रायोगिक में निर्धारित तालों को लयकारी सहित लिखना(दुगुन,तिगुन,चौगुन)
1)त्रीताल 2)झपताल 3)एकताल 4)धमार5)चौताल

द्वितीय इकाई
(अ) प्रायोगिक में निर्धारित सभी अलंकारों का लेखन
(ब) पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों की बन्दीशों का स्वरलिपी लेखन

तृतीय इकाई
प्रायोगिक में निर्धारित सभी रागों की जानकारी
1) यमन 2)बिलावल 3)खमाज 4)काफी 5) आसावरी 6)भैरव 7)पूर्वी 8)मारवा 9)भैरवी 10)तोडी

चतुर्थ इकाई
(अ) थाट पद्धति––– विस्तृत अध्ययन
(ब) राग का विस्तृत अध्ययन

पंचम इकाई
(अ) जीवनी––– भातखण्डे एवं पलुस्कर
(ब) ख्याल गायन का इतिहास

बी.ए. द्वितीय वर्ष
प्रथम इकाई

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

(1) प्रायोगिक में निर्धारित सभी रागों की जानकारी
1)हमीर 2) केदार 3) वृन्दावनी सारंग 4)कामोद 5)देस 6)भूपाली 7)बिहाग

द्वितीय इकाई
(अ) आलाप तान लेखन
(ब) पाठ्यक्रम में निर्धारित बंदिशों का स्वरलीपी लेखन
(स) भातखण्डे एवं पलुस्कर स्वरलीपी पद्धति की जानकारी एवं तुलनात्मक अध्ययन

तृतीय इकाई
(अ) नाद का विस्तृत अध्ययन,श्रुति स्वर व्यवस्था, खुले तार पर स्वरोंकी स्थापना आदि
(ब) तानपूरे एवं तबले का सचित्र सम्पूर्ण वर्णन

चतुर्थ इकाई
(अ) जीवनीकृ1)तानसेन 2)अमीर खुसरो
(ब) धृपद एवं धमार का ऐतिहासिक अध्ययन

पंचम इकाई
(अ) गायकों के गुण अवगुण
(ब) प्रायोगिक में निर्धारित तालों का लयकारी के साथ लेखन
1) दादरा 2)रूपक 3)तीव्रा 4)कहरवा 5)धुमाली

बी.ए. तृतीय वर्ष
प्रथम इकाई
(अ) प्रायोगिक में निर्धारित रागों की सम्पूर्ण जानकारी
(ब) आलाप तान लेखन

द्वितीय इकाई
(अ) स्वरलिपी लेखन
(ब) प्रायोगिक में निर्धारित तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना
1) आडा चौताल 2) झूमरा 3) दीपचन्दी 4) तिलवाडा 5) पंजाबी

तृतीय इकाई
(अ) वाद्यों के प्रकार (ब) नृत्य के प्रकार (स) तान के प्रकार गमक प्रकार

चतृर्थ इकाई
(अ) जीवनी–––1)ओंकारनाथ ठाकुर 2)कुमार गंधर्व (ब) ठुमरी टप्पा का विस्तृत अध्ययन

पंचम इकाई
(अ) व्याख्या एवं विवेचन
1) मार्गी–देशी 2) अल्पत्व–बहुत्व 3) आविर्भाव–तिरोभाव 4) निबद्ध–अनिबद्ध 5) हार्मनी–मेलडी 6) रागालाप–रूपकालाप 7) ग्राम–मूर्छना 8) रागांग–वर्गीकरण–थाट राग वर्गीकरण 9) स्वस्थान नियम
(ब) कर्नाटक पद्धति के गीत प्रकार,
(स) कर्नाटक ताल पद्धति

इस प्रकार उपरोक्तानुसार बी.ए. कंठ सेगीत का पाठ्यक्रम प्रस्तावित है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में स्नातक पाठ्यक्रम में आए हुए विषयों का विस्तृत अध्ययन होना चाहिए। इसके अलावा ध्वनि शास्त्र,सौन्दर्य शास्त्र,भारतीय संगीत का वैदिक काल से आधुनिक काल तक सम्पूर्ण इतिहास,विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन,शोधप्रणाली शास्त्र,संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध,संगीत

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

का दूसरे विषयों यथा दर्शन,मनोविज्ञान,,समाज विज्ञान आदि से सम्बन्ध जैसे विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। प्रायोगिक में स्नातक के समान ही 10–10 राग होने चाहिए जिसमें 5 रागों का सम्पूर्ण गायकी सहित गायक तथा अन्य पांच रागों का स्वरविस्तार एवं बन्दिशों का गायन होना चाहिए।इस प्रकार ड.।. की उपाधि प्राप्त करते समय विद्यार्थि को 10 रागों की व्यवस्थित रूप से गायन क्षमता निर्मित हो सकती है। साथ ही धृपद ठुमरी तथा सुगम संगीत का अलग से प्रायोगिक आवश्यक है। शब्द सीमा के बंधन से स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम विस्तृत रूप से नही दिया जा रहा है।